

अध्याय 9

बंदर और गिलहरी

प्रश्न-अभ्यास

गप्पें

बंदर की पूँछ लंबी थी, इतनी लंबी थी,
इतनी लंबी जैसे "सड़क"
चूहे की पूँछ इतनी घनी थी, इतनी घनी थी,
इतनी घनी थी जैसे जंगल।
भालू इतना मोटा था, इतना मोटा था,
इतना मोटा था जैसे "हाथी"।
ऊँट इतना ऊँचा था, इतना ऊँचा था,
इतना ऊँचा था जैसे "पहाड़"।
चुहिया इतनी छोटी थी, इतनी छोटी थी,
इतनी छोटी थी जैसे "चींटी"।
कुत्ते की पूँछ इतनी टेढ़ी थी,
इतनी टेढ़ी थी, इतनी टेढ़ी थी जैसे "जलेबी"।
कोयल की "आवाज" इतनी "मीठी" थी,
'इतनी' 'मीठी' 'थी'
'इतनी मीठी थी जैसे "शहद"।

गुदगुदी

कहानी में बंदर को गुदगुदी हुई।
अपने दोस्त को गुदगुदी करो।
पेट पर, पीठ पर, गर्दन पर,
हथेली पर, तलवे पर।
क्या हुआ?
अब खुद को गुदगुदी करके देखो।
अब क्या हुआ?

उत्तर :

विद्यार्थी स्वयं करें।

क्या करोगे

प्रश्न 1.

गिलहरी ने बंदर की पूँछ से झूला झूला। तुम इन चीजों से क्या-क्या करोगी? करके दिखाओ।

उत्तर :

रुमाल	आँख-मिचौली का खेल खेल सकती हूँ	सिर पर रखकर गरमी से बच सकती हूँ
पेंसिल	इससे चित्र बना सकती हूँ	इससे सिर खुजला सकती हूँ
फुटा	इसकी सहायता से कागज पर हाशिया बना सकती हूँ	इससे कागज को दो भागों में बाँट सकती हूँ

क्या-क्या

प्रश्न 2.

तुम तो कितनी सारी चीजें खाते हो, जैसे-दूध-भात, संतरा, केला। इनके अलावा तुम और क्या-क्या खाते हो?

उत्तर :

रोटी, सब्जी, दही, आइसक्रीम, आम, सेब, अंगूर, पपीता, इत्यादि।



प्रश्न 3.

गिलहरी क्या-क्या खा लेती होगी?

उत्तर :

काजू, किशमिश, बादाम, अखरोट इत्यादि।

प्रश्न 4.

बंदर क्या-क्या खा लेता होगा?

उत्तर :

चना, मूंगफली, केला, संतरा, रोटी, ब्रेड, बिस्कुट इत्यादि।

कौन-कौन



मैं बहुत उछल-कूद करती हूँ।



प्रश्न 5.

जानवरों में कौन-कौन उछल-कूद करता होगा?

गाय

खरगोश

शेर

बिल्ली

गधा

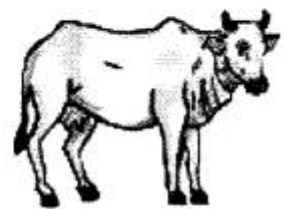
चूहा

गिलहरी

कुत्ता

हाथी

ऊँट



उत्तर :

उछल-कूद करते हैं	उछल-कूद नहीं करते
गिलहरी	गाय
खरगोश	शेर
बिल्ली	गधा
चूहा	हाथी
कुत्ता	ऊँट

कहानी का सारांश

एक बंदर पेड़ पर बैठा था। उसकी पूँछ काफ़ी लंबी थी और जमीन तक लटक रही थी। एक गिलहरी ने बंदर की पूँछ को देखा। उसने सोचा कि यह कोई झूला है। वह उस पर चढ़कर झूलने लगी। बंदर को गुदगुदी होने लगी। उसने गिलहरी से हँसकर कहा कि उसे गुदगुदी हो रही है। इस पर गिलहरी चौंक गई। उसने बंदर से कहा कि यह तुम हो बंदर भैया, मैं तो समझ रही थी कि कोई झूला है। मुझे तो बड़ा मज़ा आ रहा था। यह कहकर हँसती हुई गिलहरी पेड़ की डाल पर चढ़ गई।

शब्दार्थ : ज़मीन-धरती। मज़ा-आनंद।